जबर्दस्ती से राजा
(6:1–15)

जॉन बार्टन की, जो यूगांडा के बासोगा लोगों में काम करने वाला एक मिशनरी प्रचारक है, मुलाकात गांव में एक बूढ़े आदमी से हुई जो दो अलग–अलग बाइबलों से पढ़ने की बड़ी कोशिश कर रहा था। उनमें से कोई भी बाइबल उसकी भाषा में नहीं लिखी गई थी, सो वह शब्दों को समझने के लिए संघर्ष कर रहा था। जॉन को लुसोगा भाषा अच्छी तरह से बोलनी नहीं आती थी और वह बूढ़ा आदमी अधिक अंग्रेज़ी नहीं बोलता था, फिर भी उन्होंने कुछ देर तक बातें कीं जिन्हें पढ़ने की वह कोशिश कर रहा था। उसने जॉन को बताया कि बासोगा लोगों की समस्या यह है कि बाइबल का संदेश पाने के लिए, उन्हें ''आपकी ज़बान खरीदनी'' पड़ेगी। पहले तो, जॉन समझ नहीं पाया कि उसके कहने का क्या अर्थ था। परन्तु अन्त में वह समझ गया कि वह बूढ़ा आदमी कह रहा था कि उसके लोगों को अंग्रेज़ी में बाइबल पढ़ने और उस पर चर्चा करने के योग्य होने के लिए अंग्रेज़ी स्कूलों में शिक्षा पाने के लिए फीस देनी पड़ेगी।

जॉन ने अपना उत्तर बताया:

> मैंने उस बूढ़े आदमी को बताया कि मैं उसकी भाषा सीख रहा हूं ताकि मैं ''नि:शुल्क'' बासोगा में संदेश पहुंचा सकूं। वह हैरान था, और वह मुझे मिलने के लिए वापस बुलाना चाहता है।
>
> ''वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया।'' अन्य शब्दों में, यीशु हमारे पास आया। उसने हमारी भाषा बोली। वह हमारी दुनिया में रहा। वह हमारे जैसा बन गया। उसने दूरी को मिटा दिया; वह हमसे ऐसा नहीं करवाता। और ऐसा करते हुए उसने हमें अपनी महिमा दिखाई, ''उसकी और केवल उसी की महिमा, जो पिता की ओर से आया, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है।''[1]

जॉन बार्टन जैसे लोग जब भी यीशु की कहानी दूसरे लोगों को बताते हैं तो परमेश्वर की महिमा प्रकट होती है। यूहन्ना 6:1–15 में, फिर से परमेश्वर की महिमा दिखाई देती है, इस बार यह महिमा यीशु की कहानी में पांच हज़ार लोगों को भोजन कराने की कहानी में है।

कहानी (6:1-15)

अध्याय 5 में यहूदियों के पर्व के दौरान यरूशलेम में यीशु की शिक्षा का वर्णन है। अध्याय 6 यीशु के साथ गलील के इलाके में ले आता है जहां उसने अपने चेलों के साथ गलील सागर पार किया था। तब तक उसकी प्रसिद्धि चरम पर पहुंच चुकी थी। लोगों में उसके द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के ''चिह्नों'' की चर्चा थी। आयत 2 में यूनानी भाषा के अपूर्ण वाक्य की तीन क्रियाएं हैं जो निरन्तर क्रिया का संकेत देती हैं। अन्य शब्दों में, इस आयत का अर्थ है ''एक बड़ी भीड़ *आती जा रही थी* क्योंकि वे वह सब *देख रहे थे* जो यीशु *करता जा रहा था।*''

यूहन्ना द्वारा दिया गया अगला वृत्तांत यह है कि ''यहूदियों के फसह का पर्व निकट था'' (6:4)। मन्दिर का शुद्ध किया जाना भी उसी समय हुआ था जब ''यहूदियों का फसह का पर्ब्ब निकट था'' (2:13क)। छोटा लगने वाला यह वृत्तांत सम्भवत: यह वर्णन करता है कि इतने लोग उस दिन यीशु को देखने और सुनने के लिए क्यों आए थे। पहली शताब्दी के इस्राएल में फसह का मौसम ऐसा समय होता था जब देशभक्ति की भावनाएं बहुत उफान पर होती थीं। हर साल यहूदी लोग यरूशलेम में इकट्ठे होकर प्रतीक्षा करते थे कि क्या पता मसीहा उस वर्ष पहुंचकर रोमी हाकिमों को उखाड़ फेंके और इस्राएल का आजाद और स्वतन्त्र राज्य फिर से बहाल कर दे।

परिणामस्वरूप, फसह के निकट आने पर यहूदी लोगों में यीशु के आश्र्चकर्मों से उत्तेजित होकर यह उम्मीद जागी कि यीशु ही इस्राएल का वह राजा होगा जिसकी प्रतीक्षा वे वर्षों से कर रहे थे! उस दिन यीशु के पीछे चलने वाले पांच हज़ार लोग (6:10), बिना सोचे-समझे उसके पीछे नहीं चले थे कि वे केवल उत्सुकतावश ही आए होंगे। बल्कि वे जोश से भरे यहूदी योद्धा थे जो युद्ध में मसीहा के पीछे चलने को तैयार थे। किसानों ने अपनी खुर्पियां छोड़ दी थीं और दुकानदारों ने यीशु को सुनने के लिए गलील के सागर के दूर जाने के लिए अपने कामकाज बंद कर दिए थे।

जब यीशु ने पहाड़ पर लोगों की बहुत बड़ी भीड़ को अपनी तरफ आते देखा तो उसने वहां रहने वाले फिलिप्पुस से कहा (1:44), ''हम इनके भोजन के लिए कहां से रोटी मोल लाएं?'' (6:5ख)। फिलिप्पुस यीशु द्वारा दिखाए गए अन्य चिह्नों से अच्छी तरह अवगत था, परन्तु उसने यह उत्तर देकर कि भीड़ में हर एक को थोड़ा-थोड़ा खिलाने के लिए भी आठ महीनों की मजदूरी काफ़ी नहीं होगी, अपना कम विश्वास प्रकट किया (6:7) परन्तु यीशु तो जानता था कि उसने भीड़ के लिए क्या करना है।

तब अंद्रियास ने यीशु को भीड़ में एक छोटे लड़के[2] के बारे में बताया ''जिसके पास जौ की पांच रोटी और दो मछलियां'' थीं और फिर पूछने लगा, ''परन्तु इतने लोगों के लिए वे क्या हैं?'' (6:9)। यूहन्ना की पुस्तक में अंद्रियास एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका में मिलता है जो दूसरों को यीशु के पास लाया था।[3] आज के पाठक को सावधान रहना चाहिए कि आज बाज़ार में मिलने वाली या घर में बनाई जाने वाली रोटी के अनुसार ''रोटी'' और ''मछलियां'' न समझें। ये रोटियां सम्भवत: छोटी, गोल जौ की (रात्रि भोज के बड़े-बड़े

रोल) थीं जो उस समय निर्धन लोगों का प्रमुख भोजन था। मछलियां सम्भवत: ग्रास जितनी होती थीं जो मुख्यत: खाने का स्वाद बढ़ाने के लिए होती थीं। परन्तु, परमेश्वर के पुत्र के लिए यही काफी था।

यीशु ने चेलों से लोगों को कतारों में घास पर बिठाने के लिए कहा और उन्होंने ऐसा ही किया। इसके बाद जो कुछ हुआ वह इतना अविश्वसनीय था कि युगों से लोग यही खोज करने की कोशिश में हैं कि पांच रोटियों और दो मछलियों से पांच हज़ार लोगों को पेट भर खाना कैसे खिलाया जा सका था। परन्तु, यूहन्ना ने ऐलान किया कि यह एक ऐसा आश्चर्यकर्म था जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता था जिसमें यीशु ने भोजन लेकर, धन्यवाद दिया और रोटियां और मछलियां बढ़ गई थीं। लोगों ने ''जितनी वे चाहते थे'' लीं (6:11), और ''जब वे खाकर तृप्त हो गए'' (6:12) तो बचे हुए टुकड़ों की बारह टोकरियां इकट्ठी की गईं। याद रखें, कि लोगों की भीड़ में पांच हज़ार केवल पुरुष ही थे जो युद्ध में जाने के योग्य थे, और भूख के कारण काफ़ी भोजन खा सकते थे!

''चिह्न'' (6:14) देखकर लोग समझ गए कि यीशु पर विशेष रूप से परमेश्वर का हाथ था। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वह ''भविष्यवक्ता जो जगत में आने वाला था निश्चय यही है'' (6:14)। आने वाले भविष्यवक्ता की यह अपेक्षा व्यवस्था की उस शिक्षा के आधार पर थी जहां मूसा ने यह कहा था: ''तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना'' (व्यवस्थाविवरण 18:15)।

कुछ आयतों के बाद, मूसा ने प्रभु को यह कहते हुए दिखाया था: ''मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा'' (व्यवस्थाविवरण 18:18)। कानों में इन शब्दों की गूंज, मनों में देश भक्ति के स्वप्न, और दाढ़ियों में फंसे भोजन के टुकड़े लिए ये पांच हज़ार क्रांतिकारी लोग जबर्दस्ती उसे ''राजा बनाने के लिए आकर पकड़ना चाहते'' थे (6:15)। ऐसे निश्चय को मामूली बात नहीं माना जाता था। यदि वे यीशु को अपना राजा बना लेते, तो रोम की शक्तियां उनके कार्यों को युद्ध के ऐलान के रूप में देखतीं क्योंकि किसी एक को राजा बनकर गद्दी पर बिठाने के लिए दूसरे को गद्दी से उतारना आवश्यक है। चाहते तो वे यही थे!

शेष कहानी

पवित्र शास्त्र के इस भाग से आगे बढ़ने से पहले, आइए कल्पना करते हैं कि उस दिन वे पांच हज़ार लोग क्या सोच रहे थे। यीशु को अपना राजा बनाने की घोषणा करने के बाद, उनकी क्या उम्मीद होनी थी? यीशु द्वारा आश्चर्यकर्म से दिए गए भोजन से पेट भरने के बाद, वे यीशु से उम्मीद कर रहे होंगे कि वह कहीं से कोई तलवार ढूंढ़कर उसको भी वैसे ही बढ़ा दे जैसे रोटियों को बढ़ाया था और किसानों तथा दुकानदारों जैसे साधारण लोगों को हथियारों से लैस कर दे। फिर, अपनी तलवारों को चमकाते हुए वे गलील के सागर के पार

तिब्रियास की ओर कूच कर लें। शीघ्र ही वे नगर पर कब्जा करके अपने अंतिम लक्ष्य अर्थात यरूशलेम की ओर बढ़ जाएं। फसह का पर्व होने के कारण उन्हें रोमी सेना वहीं मिलनी थी। युद्ध चाहे बहुत भयंकर हो, परन्तु अन्त में रोमी लोग परास्त हो जाएंगे।

यीशु और साधारण लोगों की उसकी सेना मन्दिर की सारी गन्दगी और बुराइयों से शुद्ध कर दे और सदूकियों को गद्दियों से उतार दिया जाए। जब यरूशलेम पर कब्जे की बात रोम पहुंचेगी, तो रोम की शक्तिशाली सेनाएं यीशु और उसकी सेना को घेरने के लिए आ जाएंगी। एक बहुत बड़े निर्णायक युद्ध में यहूदी लोग एक नया विश्व साम्राज्य बनाने के लिए रोमियों को कुचल डालेंगे। यीशु की पांच हज़ार पुरुषों की काल्पनिक सेना के औसत सदस्य की यही सोच होगी! परन्तु यीशु के मन में कुछ और ही था।

उनकी और हमारी गलती

जब उम्मीदें बहुत बड़ी थीं और उत्तेजना चरम पर पहुंच चुकी थी, तो यीशु ने एक अप्रत्याशित बात की। ''फिर वह पहाड़ पर अकेला चला गया'' (6:15)। शायद उस दिन पहाड़ पर केवल वही अकेला आदमी था जो जानता था कि वह क्या करने वाला है। बारह चेलों और पांच हज़ार अनुयायियों को, यही लगता होगा कि यीशु उसी उद्देश्य से गया है जिसे पाने के लिए उसने इतना कठिन परिश्रम किया था।

मेरे ख्याल से सबसे अच्छी तुलना उस आदमी को शामिल करना होगी जिसने अपने देश का नेता बनने के लिए जीवन के चार वर्ष दे दिए हों। उस पद को पाने के अपने दावे को पक्का करने के लिए उसने हर साल कई-कई घण्टे काम किया और पूरे देश का भ्रमण किया। फिर, अन्त में, उसके परिश्रम का मोल पड़ गया: प्रारम्भिक चुनावों में, उसकी पार्टी के प्रतिनिधि दो तिहाई बहुमत से जीत गए। परन्तु, जब सभा बुलाई गई और उसे चुनने के लिए वोट डाले जाने लगे, तो कुछ अजीब बात हुई जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था। हज़ारों लोग उसके समर्थन में हाथ हिलाते हुए चिल्ला चिल्लाकर उस आदमी का नाम पुकार रहे थे, परन्तु वह व्यक्ति अचानक अपनी कुर्सी से उठकर सभागृह से बाहर चला जाता है। उसके ऐसा करने की बात सोची भी नहीं जा सकती, परन्तु इससे अधिक अशोचनीय बात नहीं हो सकती, उन पांच हज़ार लोगों द्वारा उसे अपना राजा बनाने की इच्छा करने पर यीशु ने क्या किया।

यीशु ने फिर अपने अन्तिम लक्ष्य की ओर ध्यान लगाए रखने की अपनी अद्वितीय योग्यता दिखाई। वह जानता था कि भीड़ के चापलूसी भरे निश्चय परमेश्वर के अन्तिम उद्देश्य को पूरा नहीं होने देंगे; समुद्र का विद्रोह संसार को पाप से नहीं बचा पाएगा। इसके अतिरिक्त, वह जानता था कि उनके मन की बातों के कारण उनसे बहस करना उचित नहीं होगा। इसलिए वह वहां से निकल गया!

इन आयतों के ''दर्पण'' में दो दृश्य मुझे परेशान करते हैं। मेरी पहली चिंता यीशु को हमारी अपनी इच्छा में ढालने की कोशिश की मानवीय प्रवृत्ति है। हम यीशु को यह दिखाने की अनुमति देने के बजाय कि वह कौन है, अपनी ही अपेक्षाएं उस पर थोपना चाहते हैं।

क्या हम कई बार यह नहीं सोचते कि यीशु भी हमारे जैसा ही है ? अमेरिकी लोगों को लगता है कि यीशु अमेरिकी लोगों जैसा ही होगा, जबकि एक इटली में रहने वाले को लगता है कि वह एक इटली के आदमी की तरह होगा। अंग्रेज़ी बोलने वाले लोगों की कल्पना है कि यीशु अंग्रेज़ी बोलता था जबकि स्पेनी भाषियों को यकीन है कि यीशु को स्पेनी भाषा बोलना अच्छा लगता था। धनी लोग यीशु को धनी व्यक्ति के रूप में देखते हैं जबकि निर्धन उसे निर्धन मानते हैं। पढ़े-लिखे लोग यीशु को पढ़े-लिखे व्यक्ति के रूप में चित्रित करते हैं और अनपढ़ों को यकीन है कि उनकी तरह ही उसे भी स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। भावुक लोग यीशु को भावुक व्यक्ति के रूप में देखते हैं जबकि शांत रहने वाले लोगों का दावा है कि यीशु भी उनकी तरह शांत स्वभाव का था। पांच हज़ार लोगों से यीशु के दूर चले जाने का दृश्य हमें याद दिलाता है कि हम यीशु पर अपनी अपेक्षाएं थोपकर कितने गलत होते हैं। चाहे सारे संसार ने उसे गलत समझा हो, परन्तु उसने अपने पिता की इच्छा को पूरा करते रहने पर ज़ोर दिया था।

इस छोटे से भाग में हमें दूसरी चेतावनी यह मिलती है कि हम भी अल्पकाल की समस्याओं में इतना घिर सकते हैं कि दीर्घकाल के समाधानों की ओर हमारा ध्यान ही न जाए। यीशु के समय के यहूदी लोग रोमी शासन से खीझे हुए थे। उस समय की प्रतीक्षा में, कि कब कोई आकर इस्राएल को राजनैतिक स्वतन्त्रता दिलाएगा, उन्होंने ''परमेश्वर के मेमने, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (1:29) की ओर ध्यान ही नहीं दिया। क्या हम कभी ऐसा करते हैं ? क्या हमें कभी आने वाली समस्याओं की इतनी चिंता होती है कि हम जीवन के बड़े-बड़े मुद्दों की अनदेखी कर दें ? क्या हम कभी अपने आपको करों, पीड़ा, उलझन व तनाव से छुटकारा पाने की इच्छा करते हुए पाते हैं या पाप से छुटकारे की बात भूल जाते हैं ? जब हम यीशु को अपनी अपेक्षाओं के अनुकूल बनाने की जिद करते हैं और अपने ही मन की बात मानते हैं, तो हम वही कर रहे होते हैं जो उस दिन पहाड़ पर पांच हज़ार लोगों ने किया था ... और यीशु उनसे दूर चला गया!

सारांश

लगभग दो वर्ष पूर्व, मैंने पहली बार एक 4-D स्टीरियोग्राम देखा था। मैं अपने परिवार के साथ एक मार्किट में था और हम दीवार पर लगे कुछ पोस्टरों के चारों ओर खड़े लोगों की भीड़ की तरफ आए। उन पोस्टरों में रंगदार नमूने थे जिनमें शानदार तस्वीरें थीं। हम सब उनके इर्द-गिर्द खड़े होकर उन्हें एकटक देखने लगे। कुछ लोगों को उन सांचों में छिपी खूबसूरत तस्वीरें दिखाई दे गईं, परन्तु दूसरे लोगों को वे बिल्कुल ''दिखाई'' नहीं दीं।

यूहन्ना 6:1-15 एक स्टीरियोग्राम की तरह है। तस्वीर के नीचे एक शब्द ''विजय'' लिखा हुआ है! हम सभी इसके इर्द-गिर्द खड़े होकर उस छिपी हुई आकृति को देखना चाहते हैं। हम क्या देखने की उम्मीद करते हैं ? सम्भवत: कुछ लोग उसमें एक डॉलर का चिह्न देखने की उम्मीद करेंगे, जबकि दूसरों को अपने देश के संसद भवन को देखने की उम्मीद होगी। कुछ लोगों का दृढ़ निश्चय है कि उसमें एक भवन है और दूसरे टैंकों और

बमवर्षकों वाली एक सेना की झलक होने का अनुमान लगाते हैं। फिर, किसी को वह छिपी हुई आकृति दिखाई देने लगती है और वह धीरे से कहता है, ''अरे, मुझे दिख गई।'' एक–एक करके हर कोई उस तस्वीर को देखने लगता है और हर किसी को यह वैसे नहीं मिलती जैसे उसने सोचा था। ''विजय'' क्रूस है।

पाद टिप्पणियां

[1]जॉन बार्टन, वर्क रिपोर्ट, दिसम्बर 1994. [2]इस शब्द का अर्थ है ''एक छोटा, अर्थात छोटा सा लड़का।'' [3]यूहन्ना 1:40, 41; 12:20–22. [4]''4-D अर्थात चार आयामों वाला स्टीरियोग्राम'' एक तस्वीर है जिसे एक से अधिक स्तर पर देखा जाना चाहिए। पहली नज़र में, यह आम तौर पर रंगों का घालमेल लगती है। ध्यान से दाईं ओर से सांचे, ''में से'' देखने पर एक दूसरी आकृति अर्थात तीन आयामों वाली तस्वीर दिखाई देती है।